मैं भी अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखूंगी

'' मैं भी अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखूंगी '' यह कहना है 'लीला' की पड़ोसी ताई का। आप सोच रहे होंगें कि पड़ोसी ताई ने ऐसा क्यों कहा। इसका जवाब जानने के लिए आपको सबसे पहले लीला के बारे में जानना होगा। आइए जानें कि लीला कौन है और उसमें ऐसा क्या बदलाव आया जिससे सभी हैरान थे।

राजसमंद जिले के खमनौर ब्लॉक में टाटोल नाम से एक गाँव है। 'लीला' इसी गाँव के एक गरीब परिवार में जन्मी 13 महिने की लड़की है। दिसम्बर महिनें में जब हम उसके घर गए तो हमनें उसे मैले कुचैले से कपड़े में लिपटी हुई एक खाट पर पड़े हुए देखा जहाँ पास ही में उसके बूढ़े दादा बैठे हुए थे। जब लीला के माता–पिता के बारे में उसके दादा से पूछा तो उन्होंनें बताया कि उसकी माँ खेतों में मजदूरी करने गई हुई है और पिता पत्थर की खदान में मजदूरी करने गए हुए हैं। हमें दादा से बात करने पर यह भी पता चला की लीला की 7 साल की एक बड़ी बहन व 4 साल का एक भाई भी है और माता – पिता के काम पर जाने के बाद उसकी बड़ी बहन ही उसका ध्यान रखती है। लीला के दादा ने यह भी बताया कि वह बार – बार बीमार हो जाती है और 13 महिने की होने के बाद भी बिल्कुल चलती फिरती नहीं है।

दादा से बात करके यह तो पता चल ही गया था कि लीला की घर पर देखभाल ठीक से नहीं हो पा रही है। उसकी 7 साल की बड़ी बहन जो खुद एक छोटी बच्ची है वह अपनी तरफ से छोटी बहन की देखभाल करने की कोशिश करती है लेकिन लीला को तो और ज्यादा ध्यान व देखरेख की जरूरत है। हमनें उसके के दादा को हमारा उनके घर आने का कारण बताया और उनसे लीला का एम.यू.ए.सी माप लेने के लिए पूछा तो वह तैयार हो गये। हमनें उसका एम.यू.ऐ.सी माप लिया तो उसका एम.यू.ए. सी माप 11.5 सेंटीमीटर निकला। लीला के दादा को हमनें उसकी पोषण की स्थिति के बारे में बताया और उन्हें टाटोल उप स्वास्थ्य केन्द्र पर आने को कहा।

दिनांक 20.12.2015 को टाटोल की ए.एन.एम पार्वती कुमावत ने लीला की स्वास्थ्य जॉच की। जॉच में भी वह कमजोर पाई गई। उसका वजन केवल 5 कि. 400 ग्रा. था और Z स्कोर -4SD (यह स्कोर बच्चे कि लम्बाई के अनुपात में वजन को दर्शाता है) था। वह जाँच में अति गंभीर कुपोषित पाई गई। ए.एन. एम पार्वती कुमावत ने उसका नामांकन पोषण कार्यक्रम में कर लिया। शुरू – शुरू में लीला की 7 साल की बड़ी बहन या उसके दादा ही उसे पोषण दिवस पर उप स्वास्थ्य केन्द्र पर लेकर आते थे। ए.एन.एम तथा पोषण प्रहरी को उसकी बहन तथा दादा को समझाने में बहुत दिक्कत होती थी, इसलिए

उन दोनों ने निर्णय लिया कि वह मिलकर उसकी माँ को समझाएंगी कि वह खेती बाड़ी के काम के साथ साथ बच्ची का ध्यान भी अच्छी तरह रख सकती है। पोषण प्रहरी लक्ष्मी लोहार ने धीरे – धीरे उसकी माँ को समझाना शुरू किया। उसे बताया कि किस प्रकार बच्ची को पोषण अमृत खिलाना है और उसकी देखभाल करनी है। पोषण प्रहरी समय – समय पर उसके घर या खेत पर जाकर ही उसकी माँ और घर के अन्य सदस्यों को साफ – सफाई तथा खान पान के बारे में जानकारी भी देती रही। ए.एन.एम तथा पोषण प्रहरी के समझाने का लीला की माता पर बहुत असर हुआ। अब माता उसको अपने साथ ही ले जाने लगी और काम से समय निकालकर उसको पोषण अमृत खिलानें लगी। अब माँ लीला को साफ सुथरा रखती है और हाथ धुलाकर ही उसे खाना खिलाती है।

जो लीला कुछ माह पहले तक बार – बार बीमार होती थी और चल फिर भी नहीं पाती थी वही लीला आज पूर घर में घूमती फिरती है। माँ कहती है कि मुझे खेतों में इसे संभालना मुश्किल हो गया है, ये इधर – उधर भागती है। ए.एन.एम पार्वती कुमावत ने 14.2.2016 को लीला को पोषण कार्यक्रम से डिस्चार्ज कर दिया। डिस्चार्ज के समय लीला का एम.यू.ए.सी माप 13 से.मी. , वजन 6.700 कि. ग्रा. तथा Z स्कोर -2SD हो गया था। लीला में आए इस चमत्कारी बदलाव को देखकर लीला की पड़ोसी ताई और आस पास के अन्य लोग हैरान हैं। लीला की पड़ोसी ताई का कहना है कि वह भी अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखेगी ताकि वह कमजोर न हों। इसलिए वह भी पोषण प्रेहरी के की सलाह को मानती है और अपने बच्चों की ढंग से देखरेख करती है।